केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) एवं NCTE पाठ्यक्रम पर आधारित

शिक्षक पात्रता परीक्षा

बाल विकास

एवं

शिक्षाशास्त्र

अध्यायवार

सॉल्वड पेपर्स

(नवीन पाठ्यक्रमानुसार कक्षा I से V एवं कक्षा VI से VIII के शिक्षकों हेतु)

प्रधान सम्पादक

Anand K. Mahajan

लेखन सहयोग

परीक्षा विशेषज्ञ समिति

कम्प्यूटर ग्राफिक्स

बालकृष्ण त्रिपाठी, आशीष गिरि

सम्पादकीय कार्यालय

12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002

मो. : 9415650134

Email : yctap12@gmail.com

website : www.yctbooks.com/www.yctfastbook.com/www.yctbooksprime.com

© All rights reserved with Publisher

प्रकाशन घोषणा

सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने रूप प्रिंटिंग प्रेस, प्रयागराज से मुद्रित करवाकर, वाई.सी.टी. पब्लिकेशन प्रा. लि., 12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव और सहयोग सादर अपेक्षित है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

मूल्य : 995/-

विषय-सूची

- बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ : पाठ्यक्रम....6
- UP TET/CTET/ALL TET की पूर्व परीक्षा प्रश्न-पत्रों का विश्लेषण चार्ट....7
- UP TET/CTET/ALL TET की पूर्व परीक्षा प्रश्न-पत्रों का पाई चार्ट एवं बार ग्राफ....10

भाग–I

बाल विकास

1. शिक्षा एवं मनोविज्ञान-------------------- 11-18
2. विकास की अवधारणा और अधिगम के साथ उसका सम्बन्ध ------------------------ 19-47
   - अभिवृद्धि एवं उसकी विशेषताएँ
   - विकास का अर्थ एवं विशेषताएँ
   - परिपक्वता का अर्थ एवं अधिगम से उसका सम्बन्ध
   - विकास को प्रभावित करने वाले कारक (परिवार, समुदाय, विद्यालय, संचार माध्यम)
   - विकास की अवस्थाएँ
   - गर्भावस्था की विशेषताएँ
   - शैशवावस्था की विशेषताएँ
   - बाल्यावस्था की विशेषताएँ
   - किशोरावस्था की विशेषताएँ
   - शारीरिक विकास
   - गत्यात्मक विकास
   - सामाजिक विकास
   - मानसिक विकास
   - संवेगात्मक विकास
   - नैतिक विकास
   - विकास और अधिगम में सम्बन्ध
   - भाषा विकास–अभिव्यक्ति क्षमता का विकास
   - सृजनात्मक क्षमता का विकास
3. बालकों के विकास के सिद्धान्त------------- 48-64
   - बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान की समझ
   - बालकों के अध्ययन की विधियाँ
   - बाल विकास के सिद्धांत
4. वंशानुक्रम और वातावरण----------------- 65-75
   - वंशानुक्रम का अर्थ एवं विशेषताएँ
   - वंशानुक्रम के नियम व सिद्धांत
   - वंशानुक्रम के विशेषक
   - वंशानुक्रम के निर्धारक एवं प्रक्रिया
   - वातावरण का अर्थ एवं विशेषताएँ
   - वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंतर्क्रिया
   - शिक्षा में वंशानुक्रम तथा वातावरण का प्रभाव
   - सुजनन विज्ञान
5. समाजीकरण की प्रक्रियाएँ, सामाजिक विश्व और बालक (शिक्षक, विद्यालय, अभिभावक, जन संचार माध्यम और मित्रगण) ---------------------------- 76-85
   - समाजीकरण का अर्थ एवं विशेषताएँ
   - समाजीकरण की अवस्थाएँ
   - समाजीकरण के सिद्धांत एवं प्रक्रिया
   - समाजीकरण के निर्धारक (शिक्षक, विद्यालय, जन संचार माध्यम, अभिभावक, मित्रगण)
6. पियाजे, कोहलबर्ग, ब्रूनर एवं वाइगोत्सकी के सिद्धान्त-------------------------- 86-124
   - पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत
   - पियाजे का नैतिक विकास सिद्धांत
   - कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत
   - ब्रूनर का संज्ञानात्मक सिद्धांत
   - वाइगोत्सकी का सिद्धांत
7. बाल केन्द्रित एवं प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा - 125-153
   - बाल–केन्द्रित/प्रगतिशील शिक्षा का अर्थ एवं विशेषताएँ
   - बाल–केन्द्रित/प्रगतिशील शिक्षा के उद्देश्य
   - बाल–केन्द्रित शिक्षा के अंतर्गत पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं शिक्षण क्रियाकलाप
   - राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 (NCF)
   - शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 (RTE)
   - बाल–केन्द्रित शिक्षा पर शिक्षाशास्त्रियों के विचार
   - बाल–केन्द्रित शिक्षा और अध्यापक की भूमिका
   - राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ–1968, 1986, 1992
   - अन्य
8. बौद्धिकता के निर्माण का विवेचित संदर्श एवं बौद्धिकता मापन ----------------- 154-165
   - बुद्धि का अर्थ एवं विशेषताएँ
   - बुद्धि के प्रकार
   - बुद्धि को निर्धारित करने वाले कारक
   - बुद्धि मापन का इतिहास
   - बुद्धि परीक्षणों के प्रकार
   - भारत में बुद्धि परीक्षण
   - बुद्धि लब्धि एवं बुद्धि का वितरण

9. बहुआयामी बौद्धिकता ----------------- 166-176

- बुद्धि का एक कारक सिद्धांत (बिने, टरमैन, स्टर्न)
- बुद्धि का द्वि-कारक सिद्धांत (स्पीयरमैन)
- बुद्धि का बहु–कारक सिद्धांत (थार्नडाइक)
- बुद्धि का समूह कारक सिद्धांत (थर्सटन)
- बुद्धि का संरचनात्मक सिद्धांत (जेपी. गिलफोर्ड)
- बुद्धि का तरल–ठोस सिद्धांत (कैटल)
- बुद्धि का त्रितंत्र सिद्धांत (स्टेनबर्ग)
- बहु–आयामी बुद्धि का सिद्धांत (हावर्ड गार्डनर)
- बुद्धि और अधिगम में अंतर्सम्बन्ध

10. व्यक्तित्व और उसका मापन ------------- 177-194

- व्यक्तित्व का अर्थ एवं विशेषताएँ
- व्यक्तित्व के प्रकार
- व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक
- व्यक्तित्व का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत (फ्रायड)
- व्यक्तित्व का शीलगुण सिद्धांत (आलपोर्ट)
- व्यक्तित्व का शीलगुण सिद्धांत (कैटल)
- व्यक्तित्व का मानवतावादी सिद्धांत (मैस्लो)
- व्यक्तिव का मनोसामाजिक सिद्धांत (इरिक्सन)
- व्यक्तिव के अन्य सिद्धांत (मूर्रे, रोजर्स, आइजेंक)
- व्यक्तित्व मापन की विधियाँ

11. भाषा एवं विचार --------------------- 195-213

- भाषा विकास की आवश्यकता एवं महत्त्व
- भाषा विकास का अर्थ, सोपान एवं विकास क्रम
- भाषा–विकास के सिद्धांत
- भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कारक
- भाषा के अंग (शब्द, पद, वाक्य आदि)
- भाषा एवं विचार में अंतर्सम्बन्ध
- चिंतन का अर्थ एवं विशेषताएँ
- चिंतन की प्रक्रिया
- चिंतन की सामग्री
- चिंतन के प्रकार
- चिंतन के सिद्धांत
- चिंतन का शैक्षिक महत्त्व
- कल्पना तथा शिक्षा
- तर्क का अर्थ, विशेषताएँ, प्रकार एवं शैक्षिक महत्त्व
- प्रत्यय निर्माण, प्रत्यय निर्माण के स्तर एवं शैक्षिक महत्त्व

12. समाज निर्माण में लैंगिक मुद्दे------------- 214-226

- समाज निर्माण में लिंग (जेंडर) की भूमिका
- लैंगिक भेदभाव
- व्यक्तित्व के विषय में लैंगिक भेद
- लैंगिक पूर्वाग्रह एवं शैक्षणिक व्यवहार
- पूर्वाग्रह एवं भेदभाव

13. व्यक्तिगत विभिन्नताएँ------------------ 227-237

- व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अर्थ एवं स्वरूप
- व्यक्तिगत विभिन्नता की प्रकृति एवं विशेषताएँ
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कारण
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं के क्षेत्र– जाति, भाषा, धर्म, लिंग, समुदाय आदि।
- व्यक्तिगत भिन्नताओं का शैक्षिक महत्त्व एवं उनका समायोजन

14. अभियोग्यता/अभिक्षमता, अभिवृत्ति तथा मूल्य -- 238-241

- अभियोग्यता/अभिक्षमता का अर्थ एवं विशेषताएँ
- अभिक्षमता/अभियोग्यता का मापन
- अभिवृत्ति का अर्थ एवं विशेषताएँ
- अभिवृत्ति मापन
- मूल्य का अर्थ एवं विशेषताएँ

15. आकलन/मूल्यांकन------------------- 242-265

- आकलन/मापन/मूल्यांकन का अर्थ एवं विशेषताएँ
- मूल्यांकन के क्षेत्र एवं उद्देश्य
- अधिगम का आकलन (योगात्मक आकलन)
- अधिगम के लिए आकलन (निर्माणात्मक आकलन)
- विद्यालय आधारित आकलन
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन
- आकलन हेतु उपयुक्त प्रश्नों का निर्माण करना
- उपलब्धि परीक्षाओं के उद्देश्य एवं प्रकार
- अध्यापक निर्मित एवं मानकीकृत परीक्षण
- अच्छे मापक उपकरण का निर्माण एवं विशेषताएँ (विश्वसनीयता, वैधता, मानक आदि)
- मापन और मूल्यांकन की प्रमुख तकनीके (अवलोकन, तकनीक, परीक्षण तकनीक, समाजमीति तकनीक आदि)
- मापन और मूल्यांकन में प्रयुक्त उपकरण (अवलोकन, एनेक्डोटल, पोर्टफोलियो आदि)
- ग्रेडिंग प्रणाली, आंकिक प्रणाली

भाग–II

समावेशी शिक्षा, निर्देशन एवं परामर्श

16. समावेशी शिक्षा की अवधारणा एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समझ -------- 266-288

- विशिष्ट बालक
- समावेशी शिक्षा का अर्थ एवं विशेषताएँ
- समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवं उद्देश्य
- समावेशी शिक्षा के सिद्धांत एवं प्रक्रिया
- समावेशित बच्चों के लिए विशेष शिक्षण विधियाँ, कौशल एवं उपकरण

- विशेष तथा समावेशित शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नीतियाँ एवं कानून
- दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम (PWD एक्ट) 1995 एवं 2016

17. अलाभान्वित एवं वंचित वर्गों सहित विविध पृष्ठभूमियों के अधिगमकर्ताओं की पहचान एवं शिक्षा --- 289-296

- अलाभान्वित बालक/अपवंचित बालक (अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक बालक, कमजोर वर्ग के बालक आदि की पहचान)
- अपवंचित बालकों की शिक्षा
- पिछड़े बालक का अर्थ एवं विशेषताएँ
- पिछड़ेपन के कारण एवं समस्याएँ
- पिछड़े बालकों की शिक्षा के प्रावधान
- मंद बुद्धि बालक एवं उनकी शिक्षा
- कुसमायोजित बालक एवं उनकी शिक्षा

18. अधिगम कठिनाइयों 'क्षति' आदि से सम्बन्धित बालक --------------------- 297-319

- अधिगम अक्षमता का अर्थ एवं विशेषताएँ
- अधिगम अक्षमता के कारण एवं प्रकार
- अधिगम अक्षम बालक की आवश्यकताएँ, एवं पहचान
- अधिगम अक्षम बालकों की शिक्षा
- दिव्यांगता/असामान्य बालक, असाधारण बालक की अवधारणा एवं प्रकार
- दृष्टि बाधित बालक एवं उनकी शिक्षा
- मूक बधिर बालक एवं उनकी शिक्षा
- वाक् बधिर बालक एवं उनकी शिक्षा
- अस्थि बधिर बालक एवं उनकी शिक्षा
- अन्य विकार से ग्रसित बालक (विकासात्मक विकार, ऑटिज्म आदि)

19. प्रतिभावान, सृजनात्मक तथा विशेष क्षमता वाले बालक ------------------- 320-332

- प्रतिभाशाली बालक का अर्थ एवं विशेषताएँ
- प्रतिभाशाली बालकों की आवश्यकताएँ एवं पहचान
- प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा
- सृजनात्मकता का अर्थ, स्वरूप, सृजनात्मक बालकों की विशेषताएँ, समस्याएँ तथा उनकी शिक्षा एवं सृजनात्मकता का मापन

20. समायोजन व मानसिक स्वास्थ्य----------- 333-340

- समायोजन का अर्थ एवं विशेषताएँ
- समायोजन के लक्षण
- समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक
- समायोजन की युक्तियाँ
- मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ एवं विशेषताएँ
- मानसिक स्वास्थ्य पर बाधा डालने वाले कारक
- बालक व शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य
- कुण्ठा का अर्थ, लक्षण एवं कुण्ठा कम करने के उपाय
- तनाव का अर्थ, कारण एवं तनाव कम करने के उपाय
- मानसिक द्वन्द्व के कारण तथा उपाय
- चिंता विकार से ग्रसित बालकों की समस्याएँ कारण एवं निदान

21. समस्याग्रस्त बालक पहचान एवं निदानात्मक पक्ष ---------------------- 341-342

- समस्यात्मक बालक का अर्थ एवं प्रकार
- समस्यात्मक बालकों की शिक्षा के उपाय

22. बाल–अपराध, कारण एवं प्रकार-------------- 343

23. निर्देशन एवं परामर्श-------------------- 344-349

- निर्देशन का अर्थ प्रकार एवं आवश्यकता
- निर्देशन की प्रक्रिया एवं सिद्धांत
- परामर्श का अर्थ, प्रकार, सिद्धांत एवं प्रक्रिया
- परामर्श के लिए आवश्यक गुण/कौशल
- परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थाएँ– (मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश इलाहाबाद, मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र, जिला चिकित्सालय, डायट मेंटर पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तंत्र, सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन आदि)
- बाल अधिगम एवं शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श का महत्त्व

24. क्रियात्मक अनुसंधान---------------------- 350

भाग–III

अधिगम और अध्यापन

25. बालकों का सोचना और सीखना तथा विद्यालय प्रदर्शन में असफलता के कारण----------- 351-386

- अधिगम का अर्थ
- अधिगम की विशेषताएँ एवं अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक
- अधिगम के प्रकार एवं क्षेत्र
- अधिगम के वक्र तथा पठार
- अधिगम अनुभव
- अधिगम शैली
- अधिगम अंतरण/स्थानान्तरण
- अधिगम के सिद्धांत
- थार्नडाइक का अधिगम सिद्धांत एवं नियम
- पावलव का अधिगम सिद्धांत
- स्किनर का अधिगम सिद्धांत
- हल का अधिगम सिद्धांत
- गुथरी का अधिगम सिद्धांत
- कोहलर का अधिगम सिद्धांत

- टालमैन का अधिगम सिद्धांत
- लेविन का अधिगम सिद्धांत
- बण्डूरा का अधिगम सिद्धांत
- रोजर्स का अधिगम सिद्धांत
- बालकों का विद्यालय प्रदर्शन में असफलता का अर्थ, कारण एवं उपाय

26. अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ-------------------- 387-413

- शिक्षण का अर्थ तथा उद्देश्य एवं इनके प्रकार
- शिक्षण की प्रक्रिया एवं अवस्थाएँ
- शिक्षण के स्तर
- शिक्षण वातावरण
- शिक्षण का संगठन
- शिक्षण का नियोजन
- शिक्षण के सिद्धांत
- शिक्षण के सूत्र
- शिक्षण प्रविधियाँ
- शिक्षण प्रतिमान एवं उसके प्रकार
- शिक्षण की नवीन विधाएँ (रचनात्मक, छात्र केन्द्रित, अध्यापक केन्द्रित आदि)
- सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण के आधारभूत कौशल
- शिक्षण उपकरण एवं शिक्षण तकनीकी
- शिक्षण विधियाँ
- सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम एवं सामाजिक संदर्भ
- शिक्षा में विद्यालय, शिक्षक, परिवार एवं समाज का योगदान
- संप्रेषण

27. बालक एक समस्या समाधानकर्ता एवं वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में ------------ 414-422

- समस्या समाधान का अर्थ
- प्रभावी समस्या समाधान व्यवहार के सोपान
- समस्या समाधान की विधियाँ
- बालक एक समस्या–समाधानकर्ता और वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में

28. बच्चों में अधिगम की वैकल्पिक अवधारणाएँ एवं उनकी त्रुटियों को समझना, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक–अवधान एवं रुचि -------------- 423-436

- पियाजे का रचनावादी दृष्टिकोण
- वाइगोत्सकी का सामाजिक रचनावादी दृष्टिकोण
- शिक्षार्थियों की त्रुटियों की पहचान
- निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण
- अवधान का अर्थ एवं विशेषताएँ
- अवधान की दशाएँ एवं प्रकार
- अवधान केन्द्रित करने के उपाय
- रुचि का अर्थ प्रकार एवं मापन
- रुचि उत्पन्न करने की विधियाँ

29. बोध/संज्ञान, संवेग, संवेदनाएँ एवं प्रत्यक्षीकरण -- 437-448

- बोध/संज्ञान का अर्थ एवं सिद्धांत
- संवेग का अर्थ, विशेषताएँ एवं संवेगात्मक बुद्धि
- संवेग के प्रकार एवं सिद्धांत
- सांवेगिक दशाएँ
- बोध, संवेग एवं अधिगम में अंतर्सम्बन्ध
- संवेदना का अर्थ, विशेषताएँ एवं प्रकार
- प्रत्यक्षीकरण का अर्थ एवं विशेषताएँ

30. अभिप्रेरणा और अधिगम --------------- 449-468

- अभिप्रेरणा की अवधारणा
- अभिप्रेरणा के संघटक एवं प्रकार
- अभिप्रेरणा के सिद्धांत
- अभिप्रेरणा और अधिगम में अंतर्संबन्ध
- अभिप्रेरणा का शिक्षा में महत्त्व
- पुनर्बलन, पुरस्कार एवं दण्ड

31. अधिगम में योगदान देने वाले कारक------- 469-472

- व्यक्तिगत कारक
- पर्यावरणीय कारक

32. स्मृति, विस्मृति, आदत निर्माण, थकान तथा अनुशासन---------------------- 473-480

- स्मृति का अर्थ एवं विशेषताएँ
- स्मृति के अंग एवं प्रक्रिया
- स्मृति के प्रकार
- स्मृति के नियम/सिद्धांत
- विस्मृति का अर्थ एवं प्रकार
- विस्मृति के कारण एवं विस्मृति कम करने के उपाय
- आदत का अर्थ, प्रकार एवं शिक्षा में इसका महत्त्व
- थकान का अर्थ, प्रकार, कारण एवं शिक्षा में महत्त्व
- अनुशासन

33. शिक्षा में सांख्यिकी विधियाँ ------------- 481-485

34. विविध---------------------------- 486-496

- कथन
- पुस्तकें
- भारत में शिक्षा का विकास
- अन्य

बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ नवीनतम पाठ्यक्रम

UP TET (I-V) एवं (VI-VIII) नवीन पाठ्यक्रम बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

30 प्रश्न

(क) विषय-वस्तु

बाल विकास–

- बाल विकास का अर्थ, आवश्यकता तथा क्षेत्र, बाल विकास की अवस्थाएँ, शारीरिक विकास, मानसिक विकास, संवेगात्मक विकास, भाषा विकास – अभिव्यक्ति क्षमता का विकास, सृजनात्मकता एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास।
- बाल विकास के आधार एवं उनको प्रभावित करने वाले कारक– वंशानुक्रम, वातावरण। (पारिवारिक, सामाजिक, विद्यालयीय, संचार माध्यम)

सीखने का अर्थ तथा सिद्धान्त–

- अधिगम (सीखने) का अर्थ प्रभावित करने वाले कारक, अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ।
- अधिगम के नियम– थार्नडाइक के सीखने के मुख्य नियम एवं अधिगम में उनका महत्व।
- अधिगम के प्रमुख सिद्धान्त तथा कक्षा शिक्षण में इनकी व्यावहारिक उपयोगिता, थार्नडाइक का प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धान्त, पैवलव का सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त, स्किनर का क्रिया प्रसूत अधिगम सिद्धान्त, कोहलर का सूझ या अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त, प्याजे का सिद्धान्त, व्योगास्की का सिद्धान्त, सीखने का वक्र– अर्थ एवं प्रकार, सीखने में पठार का अर्थ और कारण एवं निराकरण।

शिक्षण एवं शिक्षण विधाएँ-

- शिक्षण का अर्थ तथा उद्देश्य, सम्प्रेषण, शिक्षण के सिद्धान्त, शिक्षण के सूत्र, शिक्षण प्रविधियाँ, शिक्षण की नवीन विधाएँ (उपागम), सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण के आधारभूत कौशल।

समावेशी शिक्षा-निर्देशन एवं परामर्श-

- शैक्षिक समावेशन से अभिप्राय, पहचान, प्रकार, निराकरण यथा अपवंचित वर्ग, भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ण, लिंग, शारीरिक दक्षता (दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित एवं वाक्/अस्थिबाधित), मानसिक दक्षता।
- समावेशन के लिए आवश्यक उपकरण, सामग्री, विधियाँ, टी.एल.एम. एवं अभिवृत्तियाँ।
- समावेशित बच्चों का अधिगम जाँचने हेतु आवश्यक टूल्स एवं तकनीकी।
- समावेशित बच्चों के लिए विशेष शिक्षण विधियाँ। यथा-ब्रेललिपि आदि।
- समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन एवं परामर्श– अर्थ, उद्देश्य, प्रकार, विधियाँ, आवश्यकता एवं क्षेत्र।
- परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थायें–
  - मनोविज्ञानशाला उ.प्र., इलाहाबाद
  - मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र (मण्डल स्तर पर)
  - जिला चिकित्सालय
  - जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षित डायट मेण्टर
  - पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तन्त्र
  - समुदाय एवं विद्यालय की सहयोगी समितियाँ
  - सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन
- बाल-अधिगम में निर्देशन एवं परामर्श का महत्व

(ख) अधिगम और अध्यापन

- बालक किस प्रकार सोचते और सीखते हैं, बालक विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों असफल होते हैं।
- अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएं, बालकों की अधिगम कार्यनीतियां, सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम, अधिगम के सामाजिक संदर्भ।
- एक समस्या समाधानकर्त्ता और एक 'वैज्ञानिक अन्वेषक' के रूप में बालक।
- बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना, अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की त्रुटियों को समझना।
- बोध और संवेदनाएं।
- प्रेरणा और अधिगम।
- अधिगम में योगदान देने वाले कारक – निजी एवं पर्यावरणीय।

CTET (I-V) एवं (VI-VIII) नवीन पाठ्यक्रम बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

I. बाल विकास और अध्यापन — 30 प्रश्न

(क) बाल विकास (प्राथमिक विद्यालय का बालक) — 15 प्रश्न

- विकास की अवधारणा तथा अधिगम के साथ उसका संबंध
- बालकों के विकास के सिद्धान्त
- आनुवांशिकता और पर्यावरण का प्रभाव
- सामाजीकरण प्रक्रियाएं : सामाजिक विश्व और बालक (शिक्षक, अभिभावक और मित्रगण)
- पाइगेट, कोलबर्ग और वायगोट्स्की : निर्माण और विवेचित संदर्श
- बाल-केन्द्रित और प्रगामी शिक्षा की अवधारणाएँ
- बौद्धिकता के निर्माण का विवेचित संदर्श
- बहु-आयामी बौद्धिकता
- भाषा और चिंतन
- समाज निर्माण के रूप में लिंग, लिंग भूमिकाएं, लिंग-पूर्वाग्रह और शैक्षणिक व्यवहार
- शिक्षार्थियों के मध्य वैयक्तिक विभेद, भाषा, जाति, लिंग, समुदाय, धर्म आदि की विविधता पर आधारित विभेदों को समझाना
- अधिगम के लिए मूल्यांकन और अधिगम का मूल्यांकन के बीच अंतर, विद्यालय आधारित मूल्यांकन, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन : संदर्श और व्यवहार
- शिक्षार्थियों की तैयारी के स्तर के मूल्यांकन के लिए (कक्षा में शिक्षण और विवेचित चिंतन के लिए तथा शिक्षार्थी की उपलब्धि के लिए उपयुक्त प्रश्न तैयार करना।

(ख) समावेशी शिक्षा की अवधारणा तथा विशेष आवश्यकता वाले बालकों को समझना। — 5 प्रश्न

- गैर-लाभप्राप्त और अवसर-वंचित शिक्षार्थियों सहित विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए शिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं को समझना।
- अधिगम संबंधी समस्याएं, कठिनाई वाले बालकों की आवश्यकताओं को समझना।
- मेधावी, सृजनशील, विशिष्ट प्रतिभावान शिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं को समझना।

(ग) अधिगम और अध्यापन — 10 प्रश्न

- बालक किस प्रकार सोचते हैं और सीखते हैं, बालक विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों 'असफल' होते हैं।
- अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ; बालकों की अधिगम कार्यनीतियाँ : सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम; अधिगम के सामाजिक संदर्भ।
- एक समस्या समाधानकर्ता और एक 'वैज्ञानिक अन्वेषक' के रूप में बालक।
- बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना, अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की 'त्रुटियों' को समझना।
- बोध और संवेदनाएं
- प्रेरणा और अधिगम
- अधिगम में योगदान देने वाले कारक–निजी एवं पर्यावरणीय।

शिक्षक पात्रता परीक्षा के बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र विषय के पूर्व प्रश्न-पत्रों का विश्लेषण चार्ट

S.L.	Exam NAME	EXAM DATE/TIME	No. of Questions
उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा (UPTET)			
1.	**UP TET (I-V Re-exam) & (VI-VIII)**	23-01-2022	2 × 30 = 60
2.	**UP TET (I-V) Cancelled Exam**	28-11-2021	1 × 30 = 30
3.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	8-01-2020	2 × 30 = 60
4.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	18-11-2018	2 × 30 = 60
5.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	15-10-2017	2 × 30 = 60
6.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	19-12-2016	2 × 30 = 60
7.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	02-02-2016	2 × 30 = 60
8.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	23-02-2014	2 × 30 = 60
9.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	27-06-2013	2 × 30 = 60
10.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	13-11-2011	2 × 30 = 60
केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET)			
11.	**CTET 2022-2024 (I-V) & (VI-VIII)**	2022-2024	9 × 30 = 270
12.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	01-01-2022	2 × 30 = 60
13.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	03-01-2022	2 × 30 = 60
14.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	04-01-2022	2 × 30 = 60
15.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	05-01-2022	2 × 30 = 60
16.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	06-01-2022	2 × 30 = 60
17.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	07-01-2022	2 × 30 = 60
18.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	08-01-2022	2 × 30 = 60
19.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	10-01-2022	2 × 30 = 60
20.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	11-01-2022	2 × 30 = 60
21.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	12-01-2022	2 × 30 = 60
22.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	17-01-2022	2 × 30 = 60
23.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	21-01-2022	2 × 30 = 60
24.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	31-12-2021	2 × 30 = 60
25.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	30-12-2021	2 × 30 = 60
26.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	29-12-2021	2 × 30 = 60
27.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	28-12-2021	2 × 30 = 60
28.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	27-12-2021	2 × 30 = 60
29.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	24-12-2021	2 × 30 = 60
30.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	23-12-2021	2 × 30 = 60
31.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	22-12-2021	2 × 30 = 60
32.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	21-12-2021	2 × 30 = 60

33.	**CTET 2021 (I-V) & (VI-VIII)**	20-12-2021	2 × 30 = 60
34.	**CTET 2021 (I-V)**	16-12-2021	1 × 30 = 30
35.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	8-12-2019	2 × 30 = 60
36.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	7-07-2019	2 × 30 = 60
37.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	9-12-2018	2 × 30 = 60
38.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	18-09-2016	2 × 30 = 60
39.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	21-02-2016	2 × 30 = 60
40.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	20-09-2015	2 × 30 = 60
41.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	22-02-2015	2 × 30 = 60
42.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	21-09-2014	2 × 30 = 60
43.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	16-02-2014	2 × 30 = 60
44.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	28-07-2013	2 × 30 = 60
45.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	18-11-2012	2 × 30 = 60
46.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	29-01-2012	2 × 30 = 60
47.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	26-06-2011	2 × 30 = 60
	उत्तराखंड शिक्षक पात्रता परीक्षा (UTET)		
48.	**Uttarakhand TET (I-V) & (VI-VIII)**	2022-2024	7 × 30 = 210
49.	**Uttarakhand TET (I-V) & (VI-VIII)**	26-11-2021	2 × 30 = 60
50.	**Uttarakhand TET (I-V) & (VI-VIII)**	24-03-2021	2 × 30 = 60
51.	**Uttarakhand TET (I-V) & (VI-VIII)**	06-11-2019	2 × 30 = 60
52.	**Uttarakhand TET (I-V) & (VI-VIII)**	14-12-2018	2 × 30 = 60
53.	**Uttarakhand TET (I-V)**	22-01-2017	1 × 30 = 30
54.	**Uttarakhand TET (I-V)**	28-04-2016	1 × 30 = 30
55.	**Uttarakhand TET (I-V) & (VI-VIII)**	12-11-2013	2 × 30 = 60
56.	**Uttarakhand TET (I-V)**	29-01-2011	1 × 30 = 30
	छत्तीसगढ़ शिक्षक पात्रता परीक्षा (CGTET)		
57.	**Chhattishgarh TET (I-V) & (VI-VIII)**	09-01-2022	2 × 30 = 60
58.	**Chhattishgarh TET (I-V) & (VI-VIII)**	2017	2 × 30 = 60
59.	**Chhattishgarh TET (I-V) & (VI-VIII)**	2016	2 × 30 = 60
60.	**Chhattishgarh TET (I-V)**	2014	1 × 30 = 30
61.	**Chhattishgarh TET (I-V) & (VI-VIII)**	2011	2 × 30 = 60
	बिहार शिक्षक पात्रता परीक्षा (BTET)		
62.	**Bihar TET (I-V)**	23-07-2017	1 × 30 = 30
63.	**Bihar TET (I-V) & (VI-VIII)**	2013	2 × 30 = 60
64.	**Bihar TET (I-V) & (VI-VIII)**	2011	2 × 30 = 60

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET)			
65.	**Rajasthan TET (I-V)**	23-07-2022 Shift I	1× 30 = 30
66.	**Rajasthan TET (VI-VIII)**	23-07-2022 Shift II	1× 30 = 30
67.	**Rajasthan TET (VI-VIII)**	24-07-2022 Shift I	1× 30 = 30
68.	**Rajasthan TET (VI-VIII)**	24-07-2022 Shift II	1× 30 = 30
69.	**Rajasthan TET (I-V) & (VI-VIII)**	2021	2 × 30 = 60
70.	**Rajasthan TET (I-V) & (VI-VIII)**	2017	2 × 30 = 60
71.	**Rajasthan TET (I-V) & (VI-VIII)**	16.02-2016	2 × 30 = 60
72.	**Rajasthan TET (I-V) & (VI-VIII)**	09.09.2012	2× 30 = 60
73.	**Rajasthan TET (I-V) & (VI-VIII)**	31-07-2011	2 × 30 = 60
पंजाब शिक्षक पात्रता परीक्षा (PSTET)			
74.	**Punjab TET (I-V) & (VI-VIII)**	18-11-2011	2 × 30 = 60
हरियाणा शिक्षक पात्रता परीक्षा (HTET)			
75.	**Haryana TET (I-V)**	19-12-2021	1 × 30 = 30
76.	**Haryana TET (I-V)**	2020	1 × 30 = 30
77.	**Haryana TET (I-V)**	11-11-2019	1 × 30 = 30
78.	**Haryana TET (I-V)**	2018	1 × 30 = 30
79.	**Haryana TET (I-V)**	2017	1 × 30 = 30
80.	**Haryana TET (I-V) & (VI-VIII)**	2016	2 × 30 = 60
81.	**Haryana TET (I-V) & (VI-VIII)**	2015	2 × 30 = 60
82.	**Haryana TET (I-V) & (VI-VIII)**	2014	2 × 30 = 60
83.	**Haryana TET (I-V) & (VI-VIII)**	2012-13	2 × 30 = 60
84.	**Haryana TET (I-V) & (VI-VIII), Level-III**	2011	3 × 30 = 90
हिमाचल प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा (HPTET)			
85.	**HP TET (I-V) & (VI-VIII)**	2020	2 × 30 = 60
86.	**HP TET (I-V) & (VI-VIII)**	2018	2 × 30 = 60
87.	**HP TET (I-V) & (VI-VIII)**	2014	2 × 30 = 60
88.	**HP TET (I-V) & (VI-VIII)**	2013	2 × 30 = 60
असम शिक्षक पात्रता परीक्षा (ATET)			
89.	**Assam TET (I-V) & (VI-VIII)**	2019	2 × 30 = 60
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड (PRT)			
90.	**DSSSB PRT**	2021	2600

नोट- उपरोक्त प्रश्न-पत्रों के सम्यक विश्लेषण के उपरान्त शिक्षक पात्रता परीक्षा (**TET**) के **बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र** विषय से सम्बन्धित **7880** (दुहराव वाले प्रश्न + समान प्रकृति वाले प्रश्न) प्रश्नों को अध्यायवार प्रस्तुत किया गया है।

Trend Analysis of Previous Year UP TET/CTET/All TET Papers Through Bar Graph and Pie Chart

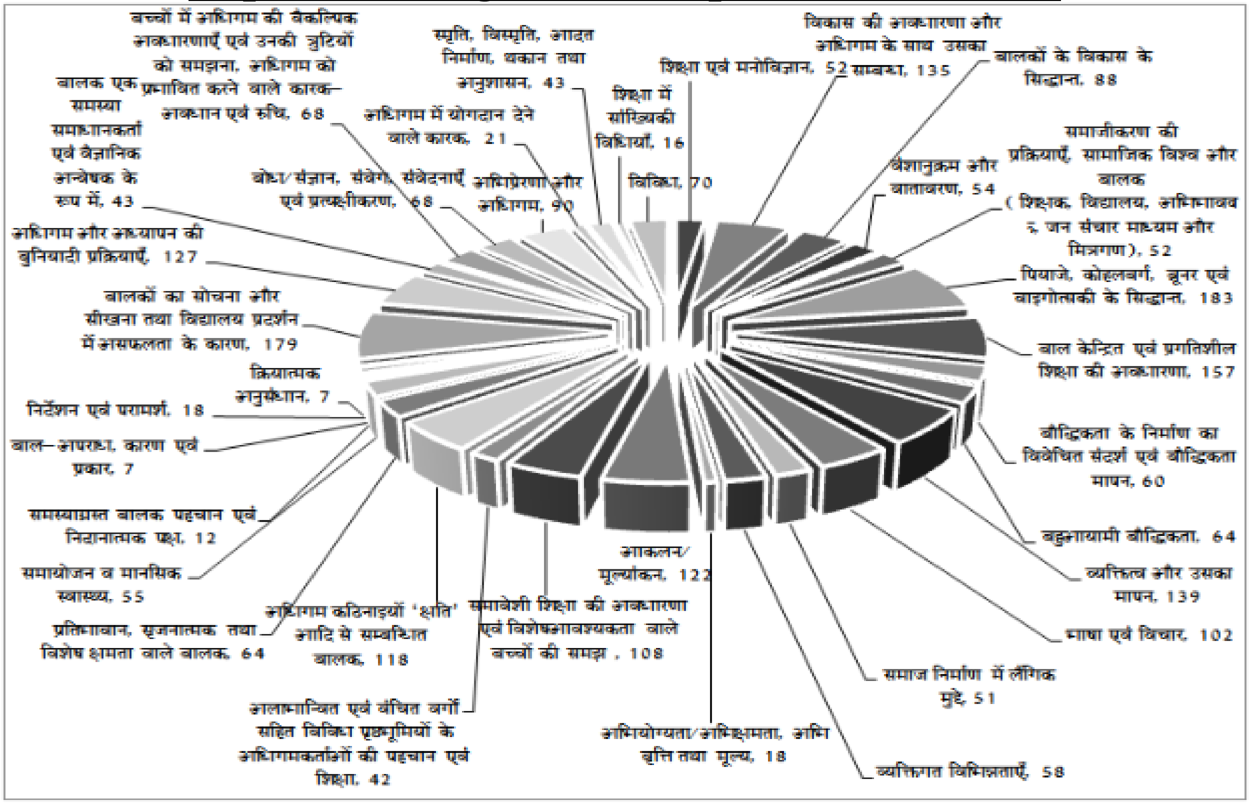

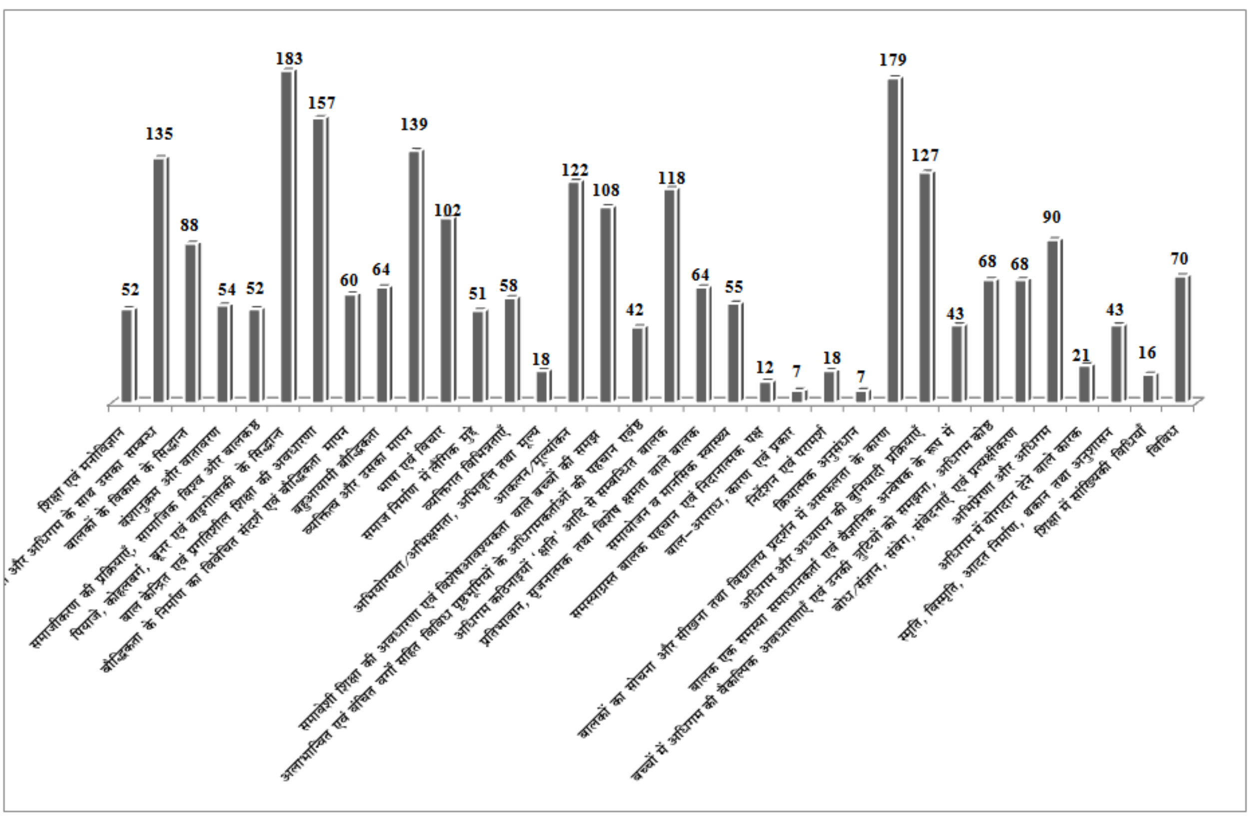

भाग–I

बाल विकास

01 शिक्षा एवं मनोविज्ञान

1. A teacher should study Educational Psychology so that-/शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए ताकि-

(a) He may stand first in his exams/इससे वह अपनी परीक्षाओं में प्रथम आ सके।
(b) He may develop the effectiveness of his teaching through its help/इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके।
(c) He may feel self satisfaction/इससे शिक्षक को आत्मसन्तुष्टि मिल सके।
(d) He may impress others/इससे वह दूसरों को प्रभावित कर सके।

UK TET (VI-VIII) 2021

Ans. (b) : शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए ताकि-
- शैक्षिक मनोविज्ञान की सहायता से शिक्षक अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके।
- यह शिक्षकों को उनके छात्रों की विशेषताओं और क्षमता के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
- यह शिक्षकों को यह समझने में मदद करता है कि अधिगम कैसे होता है।
- यह एक शिक्षक को यह निर्धारित करने में मदद करता है कि अधिगम की दिशा में एक छात्र की प्रगति का मूल्यांकन कैसे किया जाए और क्या अभीष्ट लक्ष्यों को पूरा किया गया है।

2. At present Psychology is called as the science of-/वर्तमान समय में मनोविज्ञान को किसका विज्ञान कहा जाता है?

(a) Soul/आत्मा (b) Mind/मस्तिष्क
(c) Behaviour/व्यवहार (d) Conciousness/चेतना

UK TET (VI-VIII) 2021

Ans. (c) : मनोविज्ञान, जिसे अंग्रेजी में Psychology कहते हैं, की शुरूआत में इसे आत्मा, मन और चेतना का विज्ञान माना जाता था, लेकिन वर्तमान समय में, मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान माना जाता है, जिसमें मानव और पशु दोनों के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

3. "Educational Psychology is a systematic study of educational growth." Who said?/''शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षणिक विकास का क्रमिक अध्ययन है।'' किसने कहा?

(a) Stephen/स्टीफन (b) Skinner/स्किनर
(c) Crow & Crow/क्रो एवं क्रो
(d) Munn/मन

UK TET (I-V) 24/10/2024

Ans. (a) : स्टीफन के अनुसार, शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षणिक विकास का क्रमिक और वैज्ञानिक अध्ययन है। यह छात्रों के सीखने, सोचने, समझने और व्यवहार में आने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करता है। इसका उद्देश्य शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाना और विद्यार्थियों की क्षमताओं का समुचित विकास करना होता है।

4. शिक्षा के तीन प्रमुख आधार हैं .... एवं .... ।

(a) शिक्षक, छात्र, पाठ्यक्रम
(b) सिद्धांत, शिक्षण, उद्देश्य
(c) शिक्षा, क्रियाविधि, शिक्षक
(d) महत्त्व, शिक्षक, वस्तुनिष्ठता

REET Level-2, 24.07.2022

Ans. (a) : शिक्षा के तीन प्रमुख आधार है– शिक्षक, छात्र एवं पाठ्यक्रम।
जॉन डीवी के अनुसार, ''शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है, जिसमें अध्यापक, छात्र के साथ-साथ पाठ्यक्रम भी शामिल किया जाता है क्योंकि पाठ्यक्रम के अभाव में शिक्षण कार्य पूर्ण नहीं हो सकता है।''

5. शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए ताकि–

(a) इससे वह अपनी परीक्षाओं में प्रथम आ सके।
(b) इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके।
(c) इससे शिक्षक को आत्मसन्तुष्टि मिल सके।
(d) इससे वह दूसरों को प्रभावित कर सके।

U TET Paper-2, 2021

Ans. (b) : शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए ताकि–
- इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को सम्यक् दृष्टिकोण प्रदान करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को छात्रों के प्रति प्रेम, सहानुभूति तथा समदर्शी व्यवहार को अपनाने में सहायता करता है।

6. व्यवहारवाद का जनक किसे कहा जाता है?

(a) कुर्ट लेविन (b) ई.आर. गुथरी
(c) जे.बी. वाटसन (d) डोनाल्ड हैब

HP TET June 2019
HP TET (Arts) Sep. 2018
HP TET (VI-VIII) 2013
HP TET (I-V) 2018
HP TET (Arts) Sep. 2017
HP TET (Arts) Feb. 2016

Ans. (c) : व्यवहारवाद का जनक जे.बी. वाटसन को कहा जाता है। वाटसन ने मनोविज्ञान को 'व्यवहार का विज्ञान' के रूप में विस्तृत किया है।

व्यवहारवाद की स्थापना वाटसन द्वारा 1913 में की गई थी।। वाटसन का मानना था कि मनोविज्ञान एक वस्तुनिष्ठ तथा प्रयोगात्मक मनोविज्ञान है। अतः इसकी विषयवस्तु सिर्फ व्यवहार हो सकता है चेतना नहीं क्योंकि सिर्फ व्यवहार का ही अध्ययन वस्तुनिष्ठ एवं प्रयोगात्मक ढंग से हो सकता है। वाटसन के व्यवहारवाद ने उद्दीपक-अनुक्रिया को जन्म दिया।

7. मनोविज्ञान का आधुनिक अर्थ क्या है?

(a) मन का अध्ययन (b) चेतना का अध्ययन
(c) आत्मा का अध्ययन (d) वर्ताव का अध्ययन

HP TET (Arts) Nov. 2019
Jharkhand TET (VI-VIII) 2012

Ans. (d) : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. वर्तमान समय में मनोविज्ञान को किसका विज्ञान कहा जाता है?

(a) आत्मा (b) मस्तिष्क
(c) व्यवहार (d) चेतना

U TET Paper-2 2021

Ans. (c) : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. मनोविज्ञान के मतवाद समूह और उनके समर्थकों की सूची नीचे दी गयी है :

मनोविज्ञान का मतवाद		समर्थकों का नाम	
(A)	आचरणवाद	(i)	वाइगोत्सकी
(B)	मनोविश्लेषण	(ii)	स्किनर
(C)	सामग्रिकतावाद	(iii)	फ्रॉयड
(D)	रचनात्मकवाद	(iv)	वर्दीमर

शुद्ध मेल को चुनिएगा :

(a) (A)-(i), (B)-(ii), (C)-(iii), (D)-(iv)
(b) (A)-(ii), (B)-(iii), (C)-(iv), (D)-(i)
(c) (A)-(iv), (B)-(ii), (C)-(i), (D)-(iii)
(d) (A)-(ii), (B)-(iii), (C)-(i), (D)-(iv)

Assam TET (I-V) 10.11.2019

Ans. (b) :

मतवाद		**समर्थकों के नाम**
आचरणवाद	–	स्किनर
मनोविश्लेषणवाद	–	फ्रॉयड
सामग्रिकतावाद	–	वर्दीमर
रचनात्मकवाद	–	वाइगोत्सकी

अतः विकल्प (b) सही है।

10. निम्नलिखित में से कौन-सा अनौपचारिक शिक्षा का स्रोत नहीं है?

(a) अभिभावकों द्वारा दी गई शिक्षा
(b) कक्षा–कक्ष शिक्षण के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा
(c) मित्र–समूह द्वारा दी गई शिक्षा
(d) पड़ोसियों द्वारा दी गई शिक्षा

UK TET (I-V) 14.12.2018
H TET (I-V) 2017

Ans. (b) : कक्षा-कक्ष शिक्षण के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा का स्रोत नहीं है। यह औपचारिक शिक्षा का एक स्रोत है।

अनौपचारिक शिक्षा– अनौपचारिक शिक्षा में किसी चीज की निश्चितता नहीं होती है। इसलिए इसे अनियमित, आकस्मिक और अनियोजित शिक्षा भी कहा जाता है।

विशेषता–

1. यह शिक्षा अनियमित, अव्यवस्थित, अनिश्चित एवं आकस्मिक होती है।
2. इसे व्यक्ति परिवार, समुदाय, पड़ोस, समाज आदि से प्राप्त करता है।
3. यह सरल स्वाभाविक जीवन से सम्बन्धित होती है।
4. इसके उद्देश्य पूर्व निर्धारित नहीं होते।
5. इसमें किसी प्रकार की परीक्षा या मूल्यांकन की आवश्यकता नहीं होती।
6. यह शिक्षा आजीवन चलती रहती है।

अनौपचारिक शिक्षा के साधन– परिवार, समुदाय, मित्र मण्डली, धर्म, समाज, खेल का मैदान इत्यादि।

11. ''एक स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का बसना'' किसने परिभाषित किया है?

(a) थॉम्पसन (b) पेस्टालॉजी
(c) जॉन स्टुआर्ट (d) अरस्तू

Jharkhand TET (I-V) 2012

Ans. (d) : ''एक स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का बसना'' यह अरस्तू ने परिभाषित किया है।
अरस्तू के अनुसार, ''शिक्षा स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निर्माण करती है। यह व्यक्ति की क्षमता को बढ़ाती है। विशेषकर मानसिक शक्ति को जिससे वह परम सत्य, अच्छाई और सौंदर्य का आनंद लेने योग्य हो सके।''

12. अस्तित्ववाद के अनुसार शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य है–

(a) संसार के विषय में सृजनशील जागरुकता के विषय में
(b) एक व्यक्ति को तैयार करना जो स्वयं निर्णय लेता है।
(c) साझा विश्वास
(d) अनुभव से प्राप्त तर्क का विकास

Jharkhand TET (I-V) 2012

Ans. (b) : अस्तित्ववाद के अनुसार शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य है– एक व्यक्ति को इस प्रकार से तैयार करना जो स्वयं निर्णय लेता हो। किसी एक व्यक्ति को शारीरिक मानसिक और बौद्धिक रूप से तैयार करने के बाद ही पता चल पायेगा कि निर्णय लेने को तैयार है या नहीं, अगर व्यक्ति में सही निर्णय लेने की क्षमता विकसित हो गयी है तब अस्तित्ववाद के अनुसार शिक्षा प्राथमिक उद्देश्य पूर्ण हुआ माना जायेगा।

13. शिक्षा एक पुनर्गठित और पुनर्निर्मित अनुभव है जो होता है–

(a) औपचारिक (b) अंतराल
(c) अनौपचारिक (d) निरन्तर

Jharkhand TET (I-V) 2012

Ans. (d) : शिक्षा एक पुनर्गठित और पुनर्निर्मित अनुभव है जो निरंतर होता रहता है, प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ निरंतर सीखता रहता है। शिक्षा का प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई देता है। मनुष्य शिक्षा द्वारा अपने जीवन में नित्य नये-नये अनुभव प्राप्त करता है तथा उनसे नई-नई बातें सीखता है। इस प्रकार शिक्षा का कार्यक्रम निरन्तर चलता रहता है। अतः निरन्तरता शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण लक्षण हैं।

14. 'व्यवहारवाद' निम्न में से किस व्यवहार के अध्यापन पर बल देता है?
(a) केवल आंतरिक व्यवहार
(b) केवल बाह्य व्यवहार
(c) दोनों आंतरिक एवं बाह्य व्यवहार
(d) इनमें से कोई नहीं

HP TET June 2019
HP TET (Arts) Sep. 2018

Ans. (b) : व्यवहारवाद केवल बाह्य व्यवहार के अध्यापन पर बल देता है।
व्यवहारवादी उपागम इस मान्यता पर आधारित है कि वातावरण मानव व्यवहार का निर्धारक होता है। एक व्यक्ति एक परिस्थिति विशेष में क्या अनुक्रिया/व्यवहार करता है यह इस पर निर्भर है कि पिछले समान परिस्थितियों में उसके व्यवहार का परिणाम क्या रहा है? व्यवहारवादियों का मत है कि मानव व्यवहार निरीक्षण योग्य एवं मापनीय होना चाहिए साथ ही उनका यह भी मत है कि व्यवहारिक क्रियाएँ उद्दीपक, अनुक्रिया और पुनर्बलन की क्रमिक पुनरावृत्ति द्वारा सीखने का परिणाम होती हैं। व्यवहारवादियों की मान्यता है कि मानव व्यवहार प्रायः सीखे गए होते हैं एवं मानव व्यवहार प्रायः परिस्थितियों एवं वातावरणीय कारकों पर निर्भर करता है।

15. किस मनोवैज्ञानिक के द्वारा प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित की गई?
(a) वाटसन (b) विलियम वुण्ट
(c) विलियम जेम्स (d) बिने

HP TET (Arts) Nov. 2019
HPTET (TGT) November, 2019
HPTET (TGT) December, 2014
Haryana TET (I-V) 1 Feb. 2014
HP TET (Arts) Dec. 2014
Bihar TET 2013 (VI-VIII)

Ans. (b) : प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला 'विलियम वुण्ट' द्वारा 1879 में लिपजिंग (जर्मनी) में स्थापित की गई। जिसमें उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ प्रत्यक्षण संवेदना तथा संवेग जैसी प्रमुख मानसिक क्रियाओं का अध्ययन किया। लिपजिंग की प्रयोगशाला में वुण्ट तथा उनके सहयोगियों ने मनोविज्ञान की विभिन्न समस्याओं पर उल्लेखनीय प्रयोग किए, जिसमें समय अभिक्रिया विषयक प्रयोग विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं।
नोट–विलियम वुण्ट को प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जनक कहा जाता है।

16. यह परिभाषा किसकी है?
''मनोविज्ञान, शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है'' :
(a) डेविस (b) स्किनर
(c) बी.एन. झा (d) इनमें से कोई नहीं

HP TET (JBT) June 2021

Ans. (b) : स्किनर के अनुसार, ''मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है।'' बी.एफ. स्किनर (1904-1990) क्रियाप्रसूत अनुबंधन के सिद्धांत को विकसित करने के लिए जाने जाते हैं, जो व्यवहार को बदलने के लिए पुनर्बलन या परिणामों का उपयोग करते हैं। इनके शब्दों में, ''शिक्षा मनोविज्ञान अपना अर्थ शिक्षा से, जो सामाजिक प्रक्रिया है और विज्ञान से, जो व्यवहार संबंधी विज्ञान है के तथ्य को ग्रहण करता है।

17. शिक्षा मनोविज्ञान सहायक है :
(a) अनुशासन में (b) बाल विकास के ज्ञान में
(c) मूल्यांकन में (d) सर्वांगीण विकास में

HP TET (JBT) June 2021

Ans. (d) : शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक शाखा है जिसमें मनोविज्ञान के सिद्धांतों, नियमों, विधियों का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में किया जाता है। स्किनर के अनुसार, शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में उन सभी ज्ञान और विधियों को शामिल किया जाता है जो सीखने की प्रक्रिया में अधिक अच्छी प्रकार समझने और अधिक कुशलता से निर्देशित करने के लिए आवश्यक है तथा उनके सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं।

18. व्यवहार अध्ययन के लिए कौन-सी विधि अत्यधिक वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ है?
(a) अवलोकन विधि (b) प्रयोगात्मक विधि
(c) सर्वेक्षण विधि (d) केस अध्ययन विधि

HP TET (JBT) June 2021

Ans. (b) : प्रयोगात्मक विधि एक वैज्ञानिक विधि है, इससे प्राप्त निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय तथा वैध होते हैं। इस विधि में परिस्थितियों पर मनोवैज्ञानिक का नियंत्रण रहता है। इसलिए इस विधि से कार्य-कारण सम्बन्ध स्थापित किए जा सकते हैं।
अतः प्रयोगात्मक विधि व्यवहार का अध्ययन करने का सबसे वैज्ञानिक और उद्देश्यपूर्ण तरीका है।

19. चरों के बीच सम्बन्ध दर्शाने वाला कथन है–
(a) मापन (b) वस्तुनिष्ठता
(c) परिकल्पना (d) नियंत्रण

HP TET (I-V) 2018

Ans. (c) : चरों के बीच सम्बन्ध दर्शाने वाला कथन परिकल्पना कहलाता है। परिकल्पना शब्द परि + कल्पना से मिलकर बना है। परि का अर्थ है चारों ओर तथा कल्पना का अर्थ है चिंतन। इस प्रकार परिकल्पना से तात्पर्य किसी समस्या से सम्बन्धित समस्त सम्भावित समाधान पर विचार करना। परिकल्पना किसी भी अनुसंधान का दूसरा महत्त्वपूर्ण स्तम्भ है।
करलिंगर– ''परिकल्पना को दो या दो से अधिक चरों के मध्य सम्बन्धों का कथन मानते हैं।''
मैकगुइन (Mc Guigan)– ''परिकल्पना दो या अधिक चरों के कार्यक्षम सम्बन्धों का परीक्षण योग्य कथन है।''
लुण्डवर्ग– ''परिकल्पना एक प्रयोग सम्बन्धी सामान्यीकरण है जिसकी वैधता की जाँच होती है। अपने मूलरूप में परिकल्पना एक अनुमान अथवा काल्पनिक विचार हो सकता है जो आगे के अनुसंधान के लिए आधार बनता है।

20. मनोवैज्ञानिक प्रयोग का प्रमुख उद्देश्य होता है–
(a) सह–सम्बन्ध सत्यापन
(b) प्रभाव सम्बन्ध का कारण पता चलता है
(c) पूर्व घटनाओं का अध्ययन
(d) इनमें से कोई नहीं

HP TET (I-V) 2018

Ans. (b) : मनोवैज्ञानिक प्रयोग का मुख्य उद्देश्य प्रभाव-सम्बन्ध का कारण पता करना होता है।
निःसंदेह मनोवैज्ञानिक प्रयोग की एक प्रमुख विधि प्रयोगात्मक विधि है। इस विधि के प्रयोग की विशेषता है कि इसकी सहायता से प्राप्त प्रश्नों का विश्लेषण करके प्रभाव, कार्य-कारण का सम्बन्ध स्थापित करना होता है।
प्रयोगात्मक विधि में परिस्थितियों को नियंत्रित करके व्यवहार का अवलोकन किया जाता है।

21. **किस ने कहा है कि ''शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों का प्रकटीकरण है'' ?**

(a) विवेकानंद (b) अरस्तू
(c) जेम्स (d) दयानंद

HP TET (Arts) Sep. 2017

Ans. (a) : ''शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों का प्रकटीकरण है।'' यह कथन विवेकानंद का है।
अरस्तू के अनुसार, ''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना ही शिक्षा है।''
स्वामी दयानंद के अनुसार, ''शिक्षा मानव जाति के विकास के लिए एक सर्वोच्च और सबसे महत्त्वपूर्ण नैतिक प्रक्रिया है।''
जेम्स ने शिक्षा को ''आचरण की अर्जित आदतों और व्यवहार की प्रवृत्तियों के संगठन के रूप में परिभाषित किया है।''

22. **व्यवहार अध्ययन की सबसे पुरानी विधि है :**

(a) अंतर्दर्शन विधि (b) प्रयोगात्मक
(c) मनोविश्लेषण (d) इनमे ंसे कोई नहीं

HP TET (Arts) Sep. 2017

Ans. (a) : व्यवहार अध्ययन की सबसे पुरानी विधि अंतर्दर्शन विधि है। इस विधि में स्वयं के व्यवहार का अवलोकन किया जाता है।
• यह अपने मन की स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
• यह आत्म अवलोकन या किसी की मनोस्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने को सन्दर्भित करता है।

23. **Psychology (मनोविज्ञान) शब्द का सबसे पहले प्रयोग किसके द्वारा किया गया ?**

(a) रूडोल्फ गॉलकाय (b) गिलफोर्ड
(c) स्किनर (d) पावलव

HP TET (Arts) Sep. 2017

Ans. (a) : मनोविज्ञान (Psychology) शब्द का सबसे पहले प्रयोग जर्मन दार्शनिक रूडोल्फ गॉलकाय द्वारा किया गया। 1590 में रूडोल्फ गॉलकाय ने अपनी पुस्तक साइकोलोजिया में सर्वप्रथम Psychology शब्द का प्रयोग किया।

24. **Psychology शब्द की उत्पत्ति हुई है :**

(a) Psyche + Logos यूनानी भाषा के दो शब्दों से
(b) दो शब्दों Logos + Psycho से
(c) जर्मन भाषा के शब्द से
(d) इनमें से कोई नहीं

HP TET (Arts) Sep. 2017

Ans. (a) : मनोविज्ञान को अंग्रेजी में Psychology कहते हैं। साइकोलॉजी शब्द की उत्पत्ति यूनानी भाषा के दो शब्द Psyche + Logos से मिलकर बना है। Psyche शब्द का अर्थ आत्मा होता है जबकि Logos का अर्थ अध्ययन होता है। अतः अंग्रेजी शब्द Psychology का शाब्दिक अर्थ है– आत्मा का अध्ययन।

25. **आधुनिक मनोविज्ञान के जनक हैं–**

(a) विलियम जेम्स (b) वाटसन
(c) एस. बंडुरा (d) इनमें से कोई नहीं

HP TET (Arts) Sep. 2017

Ans. (a) : विलियम जेम्स जो एक अमेरिकी दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक थे। इन्होंने मनोविज्ञान को दर्शन शास्त्र से पृथक किया था, इसलिए इन्हें मनोविज्ञान तथा आधुनिक मनोविज्ञान का जनक माना जाता है। जेम्स ने 'प्रिंसिपल ऑफ साइकोलॉजी' पुस्तक प्रकाशित की।
विलियम जेम्स ने मानव मन के अध्ययन के लिए प्रकार्यवादी उपागम का विकास किया। प्रकार्यवादियों ने इस बात पर ध्यान केन्द्रित किया कि व्यवहार लोगों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने योग्य कैसे बनाता है। जेम्स के अनुसार वातावरण से अंतःक्रिया करने वाली मानसिक प्रक्रियाओं की एक सतत् धारा के रूप में चेतना को मनोविज्ञान का मूल स्वरूप स्थापित करता है।

26. **'शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा का विज्ञान है।' – यह परिभाषा किसके द्वारा दी गई है?**

(a) बी.एफ. स्किनर (b) क्रो तथा क्रो
(c) आर.बी. कैटेल (d) ई.ए. पील

HP TET (Arts) Feb. 2016

Ans. (d) : ''शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा का विज्ञान है।'' यह परिभाषा ई.ए. पील के द्वारा दी गयी है।
ई.ए. पील ने बताया कि मनोविज्ञान के सिद्धांतों का शिक्षण प्रक्रिया में इस्तेमाल करना और शैक्षिक समस्याओं के समाधान में प्रयोग करना, शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र को परिभाषित करता है। शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा की समस्याओं का विवेचन, विश्लेषण एवं समाधान करता है। अतः ''शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा का विज्ञान है।''

27. **एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों की क्षमताओं को समझने का प्रयास कर रहा है। उसके इस उद्देश्य से निम्न में कौन-सा क्षेत्र संबंधित है?**

(a) शैक्षिक समाजशास्त्र (b) सामाजिक दर्शन
(c) माध्यम मनोविज्ञान (d) शैक्षिक मनोविज्ञान

HP TET (Arts) Feb. 2016

Ans. (d) : एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों की क्षमताओं को समझने का प्रयास कर रहा है। उसके इस उद्देश्य से शैक्षिक मनोविज्ञान का क्षेत्र संबंधित है क्योंकि शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत बालक व्यवहार, योग्यता, क्षमता, अधिगम शैली, विकास प्रक्रिया, रुचि, अभिप्रेरणा, आवश्यकता, चिंतन, अवधान आदि के विषय में अध्ययन करता है। शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों के आवश्यक कौशल तथा क्षमताओं को इस लायक बनाना है कि वे विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर शिक्षार्थियों के व्यवहारों को समझ सकें, नियंत्रित कर सकें तथा उसके बारे में पूर्व कथन कर सके।
जबकि शैक्षिक समाजशास्त्र, सामाजिक दर्शन तथा माध्यम मनोविज्ञान के क्षेत्र विद्यार्थियों की क्षमताओं को समझने के प्रयास से सम्बन्धित नहीं है। अतः विकल्प (d) सही है।

28. **शैक्षिक मनोविज्ञान क्या नहीं है?**

(a) व्यावहारिक विज्ञान (b) प्रयुक्त विज्ञान
(c) आदर्श मूलक विज्ञान (d) सामाजिक विज्ञान

HP TET (Arts) Dec. 2014

Ans. (c) : शैक्षिक मनोविज्ञान आदर्शमूलक विज्ञान नहीं है। यह व्यवहारिक विज्ञान, प्रयुक्त विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान है।
शैक्षिक मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार का तथा विभिन्न समस्याओं का अध्ययन शैक्षिक परिस्थितियों में करता है। यह अध्ययन एक विधि से किया जाता है। विधि का अर्थ उस प्रणाली या तरीके से है जिसकी सहायता से व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन, विश्लेषण और व्याख्या करके एक निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान भी अपनी विभिन्न समस्याओं का अध्ययन एवं समाधान करने के लिए वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करता है परन्तु शिक्षा मनोविज्ञान में किसी पदार्थ विज्ञान की भाँति अध्ययन की वैज्ञानिक प्रणालियों को कठोरता से लागू नहीं किया जा सकता क्योंकि यहाँ अध्ययन की वस्तु जीवित शरीरधारी शिक्षार्थी का शैक्षिक व्यवहार होता है।

29. **व्यवहार की व्याख्या में सूचना प्रक्रम को आधार बनाया गया है–**
(a) संज्ञानात्मकवाद में
(b) व्यवहारवाद में
(c) मानवतावाद में
(d) मनोविश्लेषणात्मकवाद में

HP TET (Arts) (I-V) 13.11.2021

Ans. (a) : संज्ञानात्मकता के भीतर एक विशेष रूप से प्रभावशाली वर्तमान सूचना प्रसंस्करण/प्रक्रम का सिद्धांत रहा है, जो मानव मन की तुलना कम्प्यूटर के साथ विस्तृत मॉडल से करता है जो संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के कामकाज की व्याख्या करते हैं और वे व्यवहार का निर्धारण कैसे करते हैं। सूचना प्रक्रम का सिद्धांत मनोवैज्ञानिक मॉडलों का एक समूह है, एक सक्रिय प्रोत्साहन प्रोसेसर के रूप में मानव को गर्भधारण करना, (जानकारी या 'इनपुट') आप अपने वातावरण से प्राप्त करते हैं।

30. **मानवतावाद बल देता है–**
(a) अचेतन को (b) वातावरण को
(c) स्व को (d) इदम् को

HP TET (Arts) (I-V) 13.11.2021

Ans. (c) : मानवतावाद स्व (self) को बल देता है। कार्ल रोजर्स मानववादी और नैदानिक मनोविज्ञान में योगदान करते हैं। कार्ल रोजर्स कुछ अन्य प्रसिद्ध विद्वानों के बहुत करीब थे जो मानववादी मनोविज्ञान के मौलिक विचारों की योजना के प्रभारी थे। उपचारात्मक क्षेत्र में काम करने वाले एक और प्रभावशाली मानववादी मनोवैज्ञानिक, का मानना था कि लोग मूल रूप से अच्छे हैं। वे खुद को वास्तविक बनाने की क्षमता को पूरा करने के लिए प्रेरित होते हैं और यह कि वे अपने स्वयं के व्यवहार को चुनने की क्षमता रखते हैं।

31. **निम्नलिखित में से कौन-सा मिलर तथा डोलार्ड द्वारा प्रदत्त अनुकरणात्मक व्यवहार का प्रकार नहीं है?**
(a) समान व्यवहार (b) सहसम्बन्धात्मक व्यवहार
(c) प्रतिलिपि व्यवहार (d) सुमेलित–आश्रित व्यवहार

H TET (I-V) 11.11.2019

Ans. (b) : सहसम्बन्धात्मक व्यवहार मिलर तथा डोलार्ड द्वारा प्रदत्त अनुकरणात्मक व्यवहार का प्रकार नहीं है।
बेलिस के अनुसार, ''सह सम्बन्ध का अभिप्राय है– आँकड़ों के दो या दो से अधिक विभिन्न समूहों की तुलना जिससे उसके सम्बन्ध को जाना जा सके और उस सम्बन्ध की मात्रा को अंकात्मक रूप में व्यक्त किया जा सके।''
मन के अनुसार, ''सह सम्बन्ध दो चरों के बीच सन्निकटता के स्तर का एक सांख्यिकीय मापन हैं।''

32. **जब एक ही विषय के विकास का अध्ययन अधिक समयावधि तक किया जाता है, इस अध्ययन को कहते हैं–**
(a) जीवन वृत्तान्त अध्ययन (b) सर्वे अध्ययन
(c) अनुप्रस्थ–काट अध्ययन (d) अनुदैर्ध्य अध्ययन

H TET (I-V) 11.11.2019

Ans. (d) : अनुदैर्ध्य अध्ययन में एक ही विषय का अध्ययन बार–बार किया जाता है, जिससे किसी भी समय होने वाले परिवर्तन का पता लगाया जा सके। अनुदैर्ध्य अध्ययन एक प्रकार का सहसम्बन्ध अनुसंधान है। जिसमें अनेक चरों पर निरीक्षण और संग्रह करते हैं।

33. **''शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है, जो शिक्षण एवं सीखने से सम्बन्धित है।'' यह कथन दिया गया है–**
(a) वुडवर्थ द्वारा (b) स्किनर द्वारा
(c) सिम्पसन द्वारा (d) पावलॉव द्वारा

H TET (I-V) 11.11.2019

Ans. (b) : शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है, जो शिक्षण एवं सीखने से सम्बन्धित है, यह कथन स्किनर द्वारा दिया गया है। क्योंकि–
- यह उन कारकों और स्थितियों के बारे में गहन अध्ययन करता है जो सीखने को प्रभावित करते हैं।
- यह कक्षा में आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए मनोविज्ञान के सिद्धांतों का अनुप्रयोग है।
- यह शिक्षार्थियों और उनके मूल्यांकन के लिए विकसित तरीकों के बीच व्यक्तिगत अंतर को समझने में मदद करता है।

34. **निम्नलिखित में से कौन-सा मनोवैज्ञानिक व्यवहारवाद से संबंधित नहीं है ?**
(a) वाटसन (b) स्किनर
(c) हल (d) फ्रॉयड

H TET PRT (I-V) 19.12.2021

Ans. (d) : फ्रॉयड मनोवैज्ञानिक व्यवहारवाद से संबंधित नहीं है, जबकि वाटसन, स्किनर, हल, मनोवैज्ञानिक व्यवहारवाद से संबंधित है। मनोविश्लेषिक परिप्रेक्ष्य का विकास सिगमंड फ्रायड के द्वारा किया गया था। मनोविश्लेषिक परिप्रेक्ष्य में व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं को समझने एवं व्याख्या करने में अचेतन अभिप्रेरक तथा शैशवावस्था व पूर्व बाल्यावस्था की अनुभूतियों पर अधिक ध्यान दिया जाता है। इस विचारधारा के अनुसार मानव व्यवहार का प्रमुख निर्धारक उसका अचेतन होता है जबकि व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य की मान्यता है कि प्राणी के व्यवहार का निर्धारण वस्तुतः अधिगम, अनुभव तथा वातावरणीय कारकों के द्वारा होता है।

35. **शिक्षा मनोविज्ञान की विषयवस्तु निम्न में से किन मुख्य कारकों के आस-पास घूमती है?**
(a) शिक्षार्थी एवं अधिगम अनुभव
(b) शिक्षक एवं अधिगम प्रक्रिया
(c) अधिगम परिस्थितियाँ
(d) सभी विकल्प सही हैं

H TET (I-V) 2017

Ans. (d) : शिक्षा मनोविज्ञान की विषयवस्तु शिक्षार्थी एवं अधिगम अनुभव, शिक्षार्थी एवं अधिगम प्रक्रिया तथा अधिगम परिस्थितियाँ जैसे मुख्य कारकों के आस-पास घूमती है। शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो मानव व्यवहार के उन्नयन व परिमार्जन से संबंधित होती है। इसके अन्तर्गत मनोविज्ञान के मूल सम्प्रत्ययों व सिद्धान्तों का अनुप्रयोग शैक्षणिक परिस्थितियों में किया जाता है।

36. **शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए, क्योंकि–**
(a) इससे शिक्षक को आत्म–संतुष्टि मिल सके
(b) इससे वह दूसरों को प्रभावित कर सके
(c) इससे वह अपनी परीक्षाओं में प्रथम आ सके
(d) इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके

B TET (I-V) 23.07.2017

Ans. (d) : शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए क्योंकि–

- शिक्षक इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को शिक्षण सामग्री के उचित चयन तथा उसकी व्यवस्था का ज्ञान कराता है।
- शिक्षण कार्य में अध्यापक को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं के निदान तथा निराकरण में शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक की बहुत सहायता करता है।
- शिक्षक अपने विद्यार्थियों की क्षमताओं को समझने का प्रयास करता है तथा उसी अनुरूप में उसमें सुधार करने का प्रयास करता है।

37. एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों की क्षमताओं को समझने का प्रयास करना चाहिए। निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र इस उद्देश्य के साथ संबद्ध है?

(a) सामाजिक दर्शन (b) मीडिया-मनोविज्ञान
(c) शिक्षा-मनोविज्ञान (d) शिक्षा-समाजशास्त्र

CTET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011
DSSSB PRT

Ans: (c) उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. छात्र अधिगम का वार्क (VARK) मॉडल इनके द्वारा प्रस्तावित किया गया था :

(a) कोह्लबर्ग (b) नील फ्लेमिंग
(c) पियाजें (d) ई. इरिक्सन

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (b) : छात्र अधिगम का वार्क (VARK) मॉडल नील फ्लेमिंग द्वारा प्रस्तावित किया गया था। वार्क न्यूरो–लैंग्वेज–प्रोग्रामिंग (NLP) का विस्तारित रूप है। वार्क मॉडल 1987 में लिंकन विश्वविद्यालय में किये गये शोध कार्य के माध्यम से लाँच किया गया था।

39. शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति का वर्ष कौन–सा माना जाता है?

(a) 1947 (b) 1920
(c) 1940 (d) 1900

DSSSB PRT
Bihar TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (d) शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति का वर्ष 1900 माना जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान का औपचारिक प्रारम्भ आधुनिक काल में वर्ष 1889 से जी. स्टेनले हॉल के प्रयासों से माना जाता है। स्टेनले हॉल को बाल मनोविज्ञान का अन्वेषक भी कहा जाता है। थार्नडाइक द्वारा स्थापित कोलम्बिया विश्वविद्यालय (सन् 1900) में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना होने के फलस्वरूप शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन को दृढ़ता मिली एवं शिक्षा मनोविज्ञान की स्वतंत्र रूप से अध्ययन करने का सिलसिला यहीं पर शुरू हुआ था। शिक्षा मनोविज्ञान का जनक थार्नडाइक को माना जाता है।

40. शिक्षा मनोविज्ञान का सम्बन्ध किससे नहीं है?

(a) मानव व्यवहार का अध्ययन
(b) मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन
(c) सीखने के तरीकों का अध्ययन
(d) संचार माध्यमों का अध्ययन

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (d) शिक्षा मनोविज्ञान का संबंध संचार माध्यमों का अध्ययन से नहीं है। शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षा का मनोवैज्ञानिक रूप में अध्ययन कराती है। इसका सम्बन्ध मानव के व्यवहार, मानसिक प्रक्रियाओं, सीखने के तरीकों, व्यक्ति और समायोजन, व्यक्तिगत भिन्नताओं, पाठ्क्रम निर्माण, अध्ययन विधियाँ, मापन एवं मूल्यांकन आदि से सम्बन्धित है। जबकि संचार माध्यमों का अध्ययन सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के अंतर्गत किया जाता है।

41. निम्नलिखित में से कौन शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति है?

(a) कला (b) विज्ञान
(c) विध्यात्मक विज्ञान (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Hariyana TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (c) विध्यात्मक विज्ञान शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति है। शिक्षा मनोविज्ञान न पूर्ण रूप से कला है और न ही पूर्ण विज्ञान/बल्कि यह कला और विज्ञान दोनों है। शिक्षक अपने कला और कौशल से बालकों में अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करता है तथा बालक अपनी रुचि, अभिप्रेरणा, आवश्यकतानुसार अधिगम प्रक्रिया में भाग लेता है। इसलिए इसे विध्यात्मक विज्ञान भी कहा जाता है।

42. शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सत्य है?

(a) बच्चे अपने ज्ञान का स्वयं सृजन करते हैं
(b) विद्यालय में आने से पहले बच्चों को कोई पूर्व ज्ञान नहीं होता है
(c) अधिगम प्रक्रिया में बच्चों को कष्ट होता है
(d) बच्चे यथावत् सीखते हैं, जो उन्हें पढ़ाया जाता है

DSSSB PRT

Ans : (a) शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से 'बच्चे अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं।' अर्थात् बच्चों को सिखाने के लिए मात्र अधिगम परिस्थिति की उपस्थिति आवश्यक होती है तथा उन्हें अधिगम के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है जिसमें बच्चे स्वयं सक्रिय सहभागिता द्वारा अधिगम अनुभव प्राप्त करते हैं।

43. 1882 ई. में किस मनोवैज्ञानिक द्वारा लन्दन में मानवीय विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए प्रयोगशाला का निर्माण किया गया?

(a) कैटेल (b) गाल्टन
(c) अल्फ्रेड बिने (d) वुडवर्थ।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (c) अल्फ्रेड बिने ने 1882 में लन्दन में मानवीय विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए प्रयोगशाला का निर्माण किया था।

44. शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए क्योंकि

(a) इससे शिक्षक को आत्म-सन्तुष्टि मिल सके
(b) इससे वह दूसरों को प्रभावित कर सके
(c) इससे वह अपनी परीक्षाओं में प्रथम आ सके
(d) इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (d) शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए क्योकि इसकी सहायता से वह अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सकता है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना तथा उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाना। यह कार्य तभी हो सकता है जबकि विद्यार्थियों के व्यवहार के स्तर की जाँच हो सके, यह पता चल सके कि व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किस सीमा तक हुआ।

45. निम्न में से कौन-सी शिक्षा मनोविज्ञान की सर्वाधिक व्यक्तिनिष्ठ विधि है?

(a) अन्तर्दर्शन (b) बहिर्दर्शन
(c) अवलोकन (d) प्रयोगीकरण

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 15 Oct 2017